मेडिटेशन से बढ़ी मिट्टी की उर्वरा शक्ति व फसल की पौष्टिकता

माउंट आबू, 7 मई। शाश्वत यौगिक खेती पर शोधरत भारत के पहले कृषि विश्वविद्यालय दांतीवाड़ा के कुलपति डॉ. आर.सी. महेश्वरी ने कहा कि अब तक हम मेडिकेटेड विधि अर्थात बीज बोने से पहले बीज को केमिकल से ट्रीटमेंट कर बोते थे लेकिन पिछले तीन वर्षों से मेडिटेशन ध्यान द्वारा बीज को चार्ज करने के बाद बोया जा रहा है जिससे मिटटी की उर्वरा शक्ति बढ़ी है और फसल में पौष्टिकता में वृद्धि दर्ज की गई है। वे शनिवार को मुख्य अतिथि की हैसियत से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में ग्राम विकास सेवा प्रभाग की ओर से तीन दिवसीय अध्यात्मिक क्रांति द्वारा स्वर्णिम ग्राम्य भारत विषय पर आयोजित सेमीनार में देश भर से आए सहभागियों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से सिखाए जाने वाले राजयोग का प्रयोग पिछले तीन वर्षों से खेती पर किया जा रहा है इस शोध कार्य के सार्थक परिणाम से हम नोबल प्राइज प्राप्त कर सकते हैं। आने वाले समय में इस शोध काय्र की उपयोगिता बढ़ जाएगी क्योंकि इसके महत्वपूर्ण परिणाम को और अधिक सूक्ष्मता से परखने वाले यंत्रों का अविष्कार उन्नत रूप से सामने आएगा।

महाराष्ट्र सरकार के पूर्व वन, ट्रांसपोर्ट व खेलमंत्री व मोतीरामजी ठाकरे एज्युकेशन सोसायटी अध्यक्ष सुभाषराव ठाकरे ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि देश के 80 प्रतिशत लोग गांवों में बसते हैं जिनका जीवकोपार्जन खेती है। वर्तमान समय रासायनिक खाद व हाइब्रेड बीज के उपयोग का दुष्प्रभाव बढ़ता जा रहा है। जिस धरती का गायन था मेरे देश की धरती सोना उगले, आज वही धरती जहर उगल रही है। रासायिक खादों से फसलें प्रभावित हुई हैं। ऐसी परिस्थितियों में ब्रह्माकुमारी संगठन ने राजयोग के जरिए यौगिक खेती पैदा कर जो परिणाम प्राप्त किए हैं वह किसानों के लिए खुशी की बात है। शोध कार्य के जो परिणाम सामने आए है वह भविष्य के लिए सुखद संकेत है। उन्होंने एक किसान का प्रेक्टिकल अनुभव सुनाते हुए कहा कि जब तक वह किसान खेती के दौरान मांस मदिरा का सेवन करता था तो उसकी फसल अच्छी नहीं होती थी लेकिन जब उसने अपने जीवन को अध्यात्मिकता से जोड़ा तो उसका प्रभाव फसल पर पड़ा और कई गुणा पैदावार प्राप्त की। अध्यात्मिक ज्ञान हमें स्वस्थ निरोगी,चरित्रवान बनाने में मदद करता है।

ग्राम विकास सेवा प्रभाग की अध्यक्षा बी. के. मोहिनी बहन ने कहा कि ग्रामवासियों के जीवन में जागृति आने से ही भारत का यथार्थ विकास होगा। अध्यात्मिक क्रांति का जनक कोई इंसान नहीं है बल्कि स्वंय परमपिता परमात्मा है। तमोप्रधान संस्कारों को सतोप्रधान बनाने का दिव्य कार्य अध्यात्मिकता द्वारा ही संभव है। संस्कार परिवर्तन से ही संसार परिवर्तन होगा। जो गांव व्यसनों से मुक्त होगा वही सुखी व समृद्ध बनेगा।

ब्रह्माकुमारी संगठन के महासचिव बी.के. निर्वैर ने कहा कि ब्राह्मय प्रकृति को शुद्ध बनाने से पूर्व अपने अंदर की प्रकृति को स्वच्छ बनाना होगा। अध्यात्मिकता आंतरिक शुद्धिकरण करने का सशक्त माध्यम है। हम सभी आत्माओं का नेचुरल नेचर शान्ति, प्रेम व पवित्रता का है इस स्मृतिस्वरूप से ही प्रकृति भी सतोप्रधान होगी।

ग्राम विकास सेवा प्रभाग राष्ट्रीय संयोजिका बी. के. सरला बहन ने कहा कि हमारी संस्कृति कृषि संस्कृति के आधार पर है। कृषि व ग्राम्य विकास के लिए बनाई जाने वाली अनेक योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए अध्यात्मिक चेतना को जागृत करने की जरूरत है। आज यंत्रों का अभाव तो नहीं है लेकिन मंत्रों अर्थात मूल्यों के अभाव से ही समाज प्रभावित हो रहा है। प्रभाग के मुख्यालय संयोजक बी.के. राजू भाई ने अतिथियों का स्वागत किया व बी.के.गीता बहन ने मंच का संचालन किया। इससे पूर्व सेमीनार का उदघाटन विधिपूर्वक दीप प्रज्जवल के साथ हुआ।

माउंट आबू। ब्रह्माकुमारी संगठन के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में ग्राम विकास सेवा प्रभाग का दीप प्रज्जवलित कर उदघाटन करते अतिथिगण।